प्रेम पत्री

नव हरफों में समाहित धनी प्रेम की जमानत

परमहंस महाराज

श्री जुगलदास जी

www.shriprannathjivani.com

कृपया हमारे यूट्यूब चैनल "Shri Prannath Ji Vani" को अवश्य सब्सक्राइब करें।

" || ॥ परब्रह्म परमात्माय नमः ॥
॥ भूमिका एवं श्री जुगलदास महाराजजी का परिचय ॥ || "

निजानंद संप्रदाय में अनेक ब्रह्ममुनि हुए हैं, उन सबमें महाराज श्री जुगलदासजी का नाम शिरोमणी है। आपका मूल नाम एवं बचपन का बीतक नहीं मिलता है। लेकिन आपकी रचनाएँ

(1) श्री जुगलदास महाराज की पाती (श्री देवचंद्र महाराज की पाती)
(2) बड़ीवृत
(3) रसानंद सागर
(4) प्रेमपाती

आपकी रचनाएँ ऐसी हैं, जो आपको एवं समग्र सुंदर साथ को परमधाम में अवश्य विहार कराएँगी। आपका महारानी लक्ष्मीबाई के समय में प्रार्दुभाव हुआ था। क्योंकि, जब झांसीकी रानी लक्ष्मीबाई ने अग्नि स्नान किया था, तो उनकी अस्थिकुल आप चुनकर अपने स्थान में भांडेर (दतिया) ले आये थे। शाहगढ के महाराजा बखतबलि जू के दरबार में आपको उच्च स्थान प्राप्त होता था। इस घटना से अनुमान है कि, आपका बाल्यकाल 17 मी का अन्त या 18 शताब्दी के पूर्वार्ध में गुजरा है। आप के महान अनुयायी थे, परमहंस चतुरदासजी, (मटियारी) परमहंस श्री चेतनधाम (गंगापुर, बिहार) के संस्थापक चेतनदासजी एवं परमहंसश्री जीवनदासजी (गढपरोली) उपरोक्त तीनों स्थान प्रसिध्ध है।

आप तारतम ग्रहण करने के बाद श्री पद्मावतीपुरी धाम गये थे। सुना है कि, उस दिन धाम चबुतरा पर कोई अमीर सुंदरसाथ ने रसोई सेवा की थी। पकी रसोई ज्यादा बनी थी, जिसको हरिजन उठाकर बाहर फेंकने जा रहे थे, आपने पूछा "इतना ढेर सारा भोजन कहां से लाकर फेंक रहे हो?" हरिजन लोगोने व्योर, दिया। आप के दिल में यह आया कि, यह तो महाप्रसाद है, जो धनी के दरबार का जुठन ब्रह्माजी नहीं पा सके वो मुजे मिल रहा है। आपने धनी के दरबार का जुठन महाप्रसाद के भाव से आरोगा। कुछ आसपास घूमते हुए लोग ने यह दृश्य देखा तो धाम चबुतरा पर जाकर हल्ला गुल्ला मचाया कि, यह महात्माने हरिजनों के स्पर्शवाला जूठन खाया है, इस लिए आपको धाम चबुतरे पर प्रवेश करने से रोक दिया। और लोगों ने भी इस

पर अपनी अपनी नाराजगी जताई। वो समय छुआ छूत का था। धनी ने तो छुआ छूत से त्रिगुण फांस के फंद से छूडाया था, लेकिन उससे उलटा व्यवहार हुआ आपके साथ। प्रवेश नहीं मिला। धाम चबुतरे से बाहर पूरे दिन रोते रहे, धनी से अरजी करते रहे कि, क्या महाप्रसाद ग्रहण करना गुनाह है ? विरह विलाप करते रहे, उस रात्रि को धनी ने दर्शन दिया और आपको वापस भांडेर (दतिया) जाने का आदेश दिया, उसी समय से आप के दिल में परमधाम की न्यामतें आती गई। आपने 12 साल तक परमधाम के मूल स्वरुप, पचीस पक्ष, लीला का रसास्वाद लिया।

दो साल पूर्व, भांडेर (दतिया) जाने का मुझे अवसर मिला। वहां पर आपके दारा बनाये गये कुदरती वनस्पति से बने हुए रंग से चित्रित 10-12 फिट से भी ज्यादा लंबा परमधाम पट्ट एवं नमक खाई हुई रचनाए मिली, उसमे यह 'प्रेमपत्री' भी मिली। जो सुंदरसाथ के लिए प्रकाशित हो रही है।

आप ने जो 'प्रेमपत्री' नाम दिया है, सार्थक है। हमारा, धनी से रुखासुखा प्रेम-इश्क नहीं वासतव में यह" Divine Romentic Love" है, उसको शब्दो में वर्णन करना असंभव है, लेकीन आपके एक एक हरफ में जो माधुर्य, रस घोला है, यह सब आपकी परमधाम एवं मुल स्वरुप एवं लीला का तादृश्य अनुभूति, अहेसास और अनुभव का दर्शन है।

सुंदरसाथ इस प्रेमपत्री को बार बार पढेगा, सब मिलके सहुर करेगा तो हमारी रहेनी में अवश्य सुधार आयेगा और आप श्री जुगलदासजी महाराजने जो नव हरफो में लिखी हुई बातो पर, सुंदरसाथ अमल करेगा तो ईस असत् ब्रह्मांड मे सत् की अनुभूति, दर्शन एवं अकथ ज्ञान के सागर में झीलना कराने का दावा लिया है, जमानत ली है।

'रसानंद सागर' निजानंद आश्रम (बरोडा) से छपी देवचंदजी की पाती को पढा था, रसानंद सागर को बार बार पढकर उसमें डूबने का मौका धनी ने दिया है। आप सब पाठक ब्रहासृष्टि को भी उनकी रचनाए आत्मसात करने से कभी भी, कही से भी नहीं मिला होगा इतना निजानंद रसानंद प्रेमपत्री को पढकर मिलेगा। इस प्रेमपत्री की भूमिका लिखने के लिए मेरा दिल असमर्थता की अनुभूति करता है।

अंततः सब पर धनी श्री राजश्यामाजी, सच्चिदानंद स्वरूप, श्री प्राणनाथजी एवं सतगुरू की कृपा-महेर की बुंदे बरसती रहे, ऐसी प्रार्थना सह सब के कोमल कोमल श्री चरणो में कोटान कोट प्रणाम।

श्री निजानंद आश्रम, वडोदरा
आपकी चरणरज – रमणभाई के. पटेल

क्यों कहूं चरन की बुजरकियां, इत नाहीं ठौर बोलन।
ए पकड़ सरूप पूरा देत हैं, मेरे जीव के एही जीवन।।

कॉपीराइट

कॉपीराइट © 2026 श्री प्राणनाथ जी वाणी
सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक के किसी भी अंश की छपाई, पुनरुत्पादन या किसी अन्य रूप में उपयोग बिना अनुमति के निषिद्ध है।

प्रेम पत्री
“ श्री राज श्री श्यामा महारानी की जय ”

श्री सूरत सुहागिन को और दुल्हिन आशिक को, तरफ हादी माशुक से प्रेम पत्री और जुगत प्रेम उपाय की रोशन हूजियो।

श्री श्री श्री सूरत महारानी को, अलमस्त दिवानी को, आशिक मस्तानी को, तरफ हादी माशूक मकबूल के से, कुछ संदेशे समाचार प्रेम उपाय के रोशन और हूजियो, की हो दुल्हिन दिवानी, हो सूरत महारानी, हम तुमसे चार वेद और चार कतेब और जितनी ब्रह्मांड चौदे भवन में ग्रंथ किताबें है, तिन सबका मगज़ सार - जीव कहत है, सो तुम आतम रूह के श्रवन से सुनियों और जो तुम इसी वजूद से माशूक अक्षरातीत से मिला चाहौ और इसी वजूद में अकह अक्षरातीत सुख चाहौ, तो ऊपर इन हरफौ का अमल कीजियों। री हो सुहागिन! इन हरफो पर अमल करे पीछे, जो तुमको इसी वजूद में जो अकह अगम आनंद न पैदा होवे, तिसके हम जमानतदार है और इसी वजूद से जहां मरके पहुंचत है, तीस परमधाम में जो तुम जियत न पहुँचो, तीस के हम जमानतदार है और इसी वजूद में बिन ही पढे और बिन ही सुने और बिन ही सोहोबत करे और कष्ट-मेहनत करे, थोरी मुद्दत में जो तुमको ब्रह्मांड को ज्ञान न खुल जावे और अगम निगम न सूजन लगे और जो काम लाख बरस की मेहनत से न होवे, सो काम तुम्हारा बिन ही श्रम, सहज ही में न होवे, तीस के हम जमानतदार है और इस ही वजूद में जो तुम औलिया अंबिया पैगंबर खासलखास मोमन न हो जाओ, तीस के हम जमानतदार है।

परंतु तुम निर्भय निशंक होके और ब्रह्मांड के भले बुरे कहने से कान मूंद के और ऐश रंगत तमाशे देखने से आँख मेच के और माशूक की दोस्ती सिवाय और की दोस्ती दिल से धोय के, ऊपर इन हरफौ के अमल करो. तब इस मंजल को पहुंचौगी । और जो कछु हमने तुमको कहा लिखा है, सो आतम सो विचार के देखो, तब ही इन बचनो की लज्जत पाओगी । सो हरफ अब तुमसे कहत है, सो उन हरफों को तुम आतम रूह की पाटी पर लिख लीजो। और रात-दिन चौसठ घड़ी एक पल भर मत भूलीयों। किस वास्ते की ए हरफ नहीं है, ए तो पूरनब्रह्म मिलने का पूरन दरवाजा है और तन मन जीव को आतम को आब हैयाती जीवन मूल है, सो हरफ यह है।

तो पहिला हरफ यह है की, हो अक्षरातीत की दुल्हिन! तुम जो इस माया में काहू की महतारी और काहू की स्त्री और काह की बहू और काहू की बिटिया बनी फिरती हो, सो यह निश्चय कर गफलत भूलन है। तुम न काहू की बहू हो और न काहू की बिटिया हो और न काहू की महतारी हो और न काहू की स्त्री हो। तुम अक्षरातीत भरतार की आशिक दुल्हिन हो। और जीव जीवन प्रान प्यारी हो, अलबेली अनियारी हो और रूप गुन प्रेम गर्भा हो और लाड़ली मानवंती हो। सो प्रितम तुम्हारे, तुम्हारे प्रेम इश्क की अजमाइश के कारन, तुमको सुपने में भुलाई और सुपने में सुपने के जूठे तन संबंधी मिलाये है, तीन से तुम आपा बांध रही हो। सो हो दुल्हिन! तुमने निजधाम में दूल्हे माशूक से तकब्बर (हठ-जिद्द) करके प्रेम इश्क की होड बाँधी थी, की आप हम को जैसी चाहो वैसी माया दिखाओ और एक बेर छोड़ सौ बेर अजमाओ, परंतु हम आप को कैसे हू न भूलेंगी । तब दूल्हे माशूक ने कही थी, जब तुम निश्चय कर भूल जैहो, तब मैं तुम्हारे कारन, उस माया सुपने में तुम्हारी जैसी देह धर के आऊँगा और अपनो वरन भेष बदल के मनुष्य देहीरूपी मुकना (पर्दा) दे के, पास तुम्हारे आऊँगा। तब तुम मो को हरगिज न भूलियो और जाग्रत की निसबत सुपने में निबाहियो और मैं तुमको एक इन सुपने की आँख से निजरूप और निजघर तौन दिखाऊँगा और जो कछु मेरी तुम्हारी जाग्रत की बीतक बात है और रंगभवन और रंग सेज की जो हकीकत है, सो उस सुपने में मैं तुम से सब कहूंगा। तब मेरा शब्द पहिचान लीजो और शब्द ही में होके मोको पहिचान लीजो, किस वास्ते की स्त्री अपने पति की बोली को, चाल को अच्छी भांति से पहिचानत हैं। ता ते जो तुम मेरी दुलहिन होवोजी, तो तुम मेरी आवाज को चिन्ह जैओ और मोको पहिचान के मेरे संग हुयहो। सो हे सुहागिन! ए बाते माशूक तुम्हारे ने तुमको निजधाम में कह दई थी, सो समया ऊपर शिर तुम्हारे भरिया भर वर्तमान है। तुम से जो कही थी की तुम उस माया में भूल जैहो, सो तुम उसे रोम-रोम भूल गई हो और फरमाइश हुई थी की मैं कारन तुम्हारे, तुम्हारे जैसा ही सरूप धर के नजीक तुम्हारे आऊँगा। और उस सपने में तुमसे जाग्रत की ख़बरें कहूंगा। सो हे सुहागिन! प्रितम माशूक तुम्हारे जिस भांति कहते थे, सो उसी भांति से आए हैं और भेष बदल के मनुष्य देही का मुकना (पर्दा) दिये हैं और रंग भवन की और रंग सेज की हकीकत कहत है, सो यही सतगुरु है और ए ही काशीद गुमास्ता नायब है और यही साख्यात हक्क हादी धाम के धनी है और यही

लिवावन मिलावन हारे है और यही पूरनब्रहा अक्षरातीत है और श्री धाम के मिलने का दरवाजा है और यही जाहेर में आशिक है और यही साक्षात पूरनब्रह्म माशूक है। सो हे सुहागिन! तुम सुपने की द्रष्टि छोड़ के और सुपने की जात पात नतैती छोड़ के, दावा नव किशोरी दुलहिन का लेओ। और आठ पहर चौसठ घड़ी अक्षरातीत की दुलहिन जानना और रात दिन अपने साहिब पूरनब्रह्म दुलहा की बनरी (दुलहिन) मानना। रोम-रोम निश्चय करके बेशक बेसुबह होकर अपने ताईं खासलखास रुह, रुह मोमन का ध्यान राखे और रोम-रोम निश्चय करके, तन-मन-जीव-अहम से और आठ पहर चौसठ घड़ी दुलहिन का दावा लेना। किस वास्ते की कारन तुम्हारे माशुक दुलहा श्री निजधाम से आए है और ऊपर पौर (दरवाजे) के ऊपर खड़े है। ताते तुम निश्चय करके अपनी आतम में दावा दुलहिन का लेऊँ, किस वास्ते की दावा दुलहिन का लिए बिना कोटह विषे तुम निजधाम को न पहुंचौगी और कोटहू विषे इश्क (राजजी) तुमको मुख न दिखलावेगा और कोटहू विषे दावा दुलहिन का लिए विना माशूक तुमको मुख न दिखलावेगा और अनंत सुखन के दरिया जो दुलहा माशूक कारन दुलहिन के ल्याय है, सो उस समुद्र से बिगर दावा दुलहिन का लिए बिना एक बूंद न पावोगी और बगैर दावा दुलहिन के अनंत कोटी गैबी न्यामतों से गैबी ख्यालो का कुछ लज्जत न पावोगी। तासो सिताबतर और जरूर से जरूर दावा दुलहिन का लेवो। किस वास्ते की आदि अनादि शाही मार्ग है की जोई जिस किसीने जिस किसी का भेष का दावा लिया, सोई ततखिन जिनका भेष का दावा लिया, तिनका जोश आवेश आय प्रगट हुआ और ततछीन वह दावादार उसी का रूप होकर उसी के सर्व कर्म धर्म बरतन लगो। जैसे दो लड़के थे। रहष्य के खेल में एक का श्री कृष्ण का रूप बनाया, एक का राधिका दुलहिन का रूप बनाया। जो दोऊ ने आपस में मनसा वाचा करमना करके भेष का दावा लिया, ततछिन दौ भेषो में दो दुलहा दुलहिन का जोश आवेश आय प्रगट हुआ और साक्षात श्री कृष्ण-राधिका के चैन चरित्र बरतने लगे और तद्रप श्री कृष्ण-राधिका हो गए। जोई आगे अंतर्ध्यान की लीला भई, सोई ततक्षिण राधिका के भेष धारी लड़के के प्राण छूट गए। आशिक माशूक का विछोहा नहीं सह सकता है। नरसिंह लीला के बीच में पुत्र ने पिता को उदर विदार डारो। सो भी स्वरूप धरे को जोग पाय के और एक भांड ने आगे बादशाह के, पेट के कारण, भेष संत का लिया। जोई भेष दावा संत का लिया, सोई उस भांड में प्रतिबिंब संत का पड़ा, (और) जो लाख रूपैया की मुंदरी बादशाह ने रिजकर दई, सो उस पर उस नकली संत ने लात मार के जंगल को चला गया। और एक भांड ने राजा को भेष लैके अपने बाप का शिर उड़ा दिया। सो हे सुहागिन! ऐसे याके अनंत

कोट द्रष्टांत हैं। ताते भेष दावा दुलहिन का आशिक माशूक का, मनसा बाचा करमना कर के लिया दिया चाहिये। जिससे तुम्हारे अनंत कोटी कारज और अनंत कोटी मनोरथ सिद्ध होवे। हो सूरति सुहागिन! यह पहिला हरफ हुआ।

“ दूसरा हरफ में समाहित धनी प्रेम की जमानत ”

अब दूसरा हरफ यह है की जो स्वरूप सुरति जगावने हार है और लिव बन पहुंचावन हार है, सो उस स्वरूप से लगन इश्क लगाया चाहिये। जैसे सो दश वरस को अति सुंदर कमल नैन जो राजकुमार है और अति सुंदर कमल नैनी नव जोवन कामनी है, सो दोऊ की दोऊ से मीन पपीहा कैसी लगन लगी है और चढ़ती लगन में एक समय एकांत मिलाप हो गया है और फिर के मिलाप का वायदा कौल करार हो गया है। दरम्यान इतने के दोऊ कुटम परिवार और गुरजन दूरजन में प्रीति जाहेर हो गई, सो सकल उन दोनों के ख्याल में पड़ी है और उनके घरवाले उनकी चौकी बंदोबस्त करने लगे और उन दोऊ को मिलाप होके बिछोहा भयो है। ताते दोनों हृदय आकाश में रात-दिन चौसठ घड़ी आनंद मिलाप की घटा उमड़ रही है और पल-पल छिन-छिन बृह (बारिश) की दे बरस रही है और रात-दिन वह दोनों मिलाप की बात और रात-दिन वह दोनों मिलाप की बातें और मौका ढूंढा करते हैं और रात-दिन भीतरा भीतर तलफत और तडफत और तरसत है और कुढत है और जो कोई उसके मिलाप की जुगत बतावे, तो तिसके ऊपर तन-मन-धन कुर्बान करती है। तो हे सुहागिन! जैसी उस मजाज़ी झूठी आशिक की वृत्ति झूठे माशूक से लगी है, ऐसी तुम हकीकी सच्ची आशिकी सच्चे माशूक से लगाना चाहिये।

और दूसरो द्रष्टांत, जैसे एक राजरानी को सब जन्म तरसत तरसत वृद्धापन में एक कुँवर भयो है, सो कुँवर कैसो है, की उन दोनों को प्रानन को प्रान है और प्रानन हूँ ते अधिक प्यारे है और वह दोनों पलक है और नैनन को तारो है और अनोखों लाडलों है और अनहोनी उसकी होनी है और उलटी उसकी सीधी है और दुख उसका सुख है और गालियां उसकी अमृत ते भी मीठी है और रिसाना उसका प्रेम है, सुख का मूल है। अनबोलना उसका प्रेम रस की बेकरारी का मूल है और सर्व गत मत चाल उसकी और सब दुख उसके दोनों की आंखो में प्रेम रस की कींच है। हे सुहागिन! हादी माशूक से ऐसा लाड़ चाहिये जैसा वह जूठा साथ जूठ के करत है, ऐसा तुमको साथ साँचे माशूक से किया चाहिये।

और तीसरे हठ टेक किया चाहिये, जो भला है तो अपना माशूक है और बुरा है तो अपना माशूक है और न बड़े से काम और न छोटे से । काम जो बड़ा है तो अपना माशूक है और छोटा है तो अपना माशूक है। सो अपने माशूक को मानिंद पतिव्रता के साथ हठ टेक और मर्कट मूठ के पकड़ना चाहिये, जैसे हारिल लकड़ी को पकड़ता है। ताकी हद्द और कमाल और पुरनता वहाँ तक है, कि जो खुदा ही और रूप धरके आवे, तो खुदा ही से जवाब सवाल करे, कि जिस रूप से तुमने मोको जाग्रत किया है और अकल दीदार दिया है, उसी रूप में आवो, तब तुमसे दोस्ती और मिलाप करूंगी। या विध से उस सूरत सिवाय, इस जिमी में जो खुदा ही आवे, तो खुदा ही से किनारा पकडे। ऐसा पूरन भरपूर टेकी आशिक होवे। मानिंद मजनू के, कि खुदा से कहा कि जो तें मुजको अपने ऊपर आशिक किया चाहता था, तो तें लैला क्यों न हुआ। और मानिंद शशी के कि अपनी माँ से कहती थी कि अरी दिवानी माँ मेरी, तू बदले पुन्नू के मुजको तो शाह और शहंशाह क्या बसा है। मैं तो अपने पुन्नू माशूक पर रब को निछावर किया है। सिवाय पुन्नू के मुजको रब्ब से काम नहीं। और मानिंद बिहारिनदास के, कि हरिदास बिना हरि को है कहाँ को, कि हो श्री कृष्ण प्यारे मेरे, जो तुम मोसों मिलाप किया चाहो, तो हरिदास रूप धर के आवो।

इसी विधि से एक पतिव्रता स्त्री कि विधि है कि पति ही कि टेक पूरन देख के श्री भगवान आय ठाढ़े भए और चाहा कि मानिंद स्त्री के मिलाप करें, तब वह उलट खड़ी हुई और बोली कि जो तुम मोको कंठ भर भेटा चाहो, तो मेरे उसी पति के रूप में आवो, तब तुमको अंग अपनो छुवन देऊँगी। सो हे सुहागिन! अपने माशूक कि ऐसी टेक पकड़ना चाहिये। तब वह माशूक बस होयगा और इसी टेक करके माशूक तेरे स्वाधीन हो जायगा। ताते हे सुहागिन! सर्व सुख माया के छोड़ना, परंतु माशूक हक कि टेक न छोड़ना। जिनका मिला होयगा, तिन को टेक से मिला होयगा और जिनको आगे मिलेगा, बिना इकंगी टेक से न मिलता है, न आगे मिलेगा।

और चौथा हरफ यह है कि निस्बत जाग्रत कि बेशक हो के सुपने में निभाना। जो कछु जाग्रत में रंगभवन के भीतर आठ पहर चौसठ घड़ी श्री राज कि सेवा करती थी सो सम्पूर्ण सेवा साक्षात और ध्यान द्वारा होय के सुपने में निभाना चाहिये। प्रातःकाल से उसी प्रातःकाल लौ बस्तर भूखन मेवा मिठाई भोग विलास खान पान बिना ध्यान द्वारा अरूगाये कभी भी स्वयं भोजन पकवान फल फूल ग्रहण न करें। जैसे एक कामिनी है और चंद्र बदन मृग लोचनी है, सो ऊपर सुंदरवर राजकुंवर के ऐसी आशिक है, कि एक पल भर कि जुदागी नहीं सह सकती है। दरशन जो अपने पति माशूक के है, सोई जीव जीवन प्रान आधार है। और माशूक से अपने तन मन से जीव से एक रोम की जुदागी नहीं रखती है और बिन देखे अपने माशूक के बेकरार है, दरम्यान एते कि लज्जा के जोग पाय के अपने पति माशूक से जुदी होय के मायके (पीहर) में प्राप्ति भई है। और तहां दिन रात माशूक के बृह (बिरह) में तल्लीन है और दिन रात गुरजन दूरजन को छिपाय के गुप्त भीतरा भीतर रोवत है। मानिंद मछरी के तडफत है। और जो कछु सेवन साक्षात में करती थी, सो परोक्ष दिल में करत है। दरम्यान एते कि माशूक पति उसका विकल बेकरार होय के ऊ अपनो पहिलो राजभेष बदल के, कारन अपनी दुलहिन के, उस दुलहिन के घर पिता के चाकर हुये है। दरम्यान एते कि एक समे, तक पायके एकांत मिलके अपनी निज दुलहिन को अपनों निज स्वरूप दिखाय दियो है और निज मुहल कि बातें कहि के पूरन पहिचान कराय दई है और सब अंग मिलाय के और बोसा लबौ का लैके निर्भेद निरंतर प्रीत करके फिर भेष खिदमतगार नौकर को पहिचान लिया है और खिदमत जैसी कि तैसी करने लगा है। अब इस भेद को सिवाय दुलहिन के और कोई नहीं जानता है । सब कुटम परिवार की नजर में खिदमतगार है, परंतु एक उस दुलहिन की नजर में निज भरतार है और प्रानपति प्रान आधार है। अब वह जो दुलहिन है, सो छिन छिन पल पल बेहद सुख लेत है और एक नजर में सुख बादशाह के निछावर करत है। और छिन छिन पल पल प्रेम रस में डूब डूब उसकी गत मत छबि सूरत को सनेह रस भरे नैनन सों हेरत है और फेर फेर भीतर बाहेर मुसक्यात है और दोउ मुख से आपस में नाही बोलत है, परंतु एक चितवन में ही सर्व सुख लेत है और चितवन ही में सैने इशारते रमुजे हो जाती है और चितवन ही में सबविध की जमा खातर हो जाती है। अब हो सुहागिन! जैसा मैने तुमको यह दृष्टांत दिया है, ऐसी

गति तुमको अपने हकीकी माशूक पर किया चाहिये और जाग्रत निसबत सुपने में निभाया चाहिये।

“पांचमा हरफ में समाहित धनी प्रेम की जमानत”

और पांचमा हरफ वह है कि अपने माशूक के हुकम माफक और मरजी माफक और नजर माफक बरतना चाहिये। देह, गृह, राजपाट, सुख-संपत्ति जाय, परंतु अपने प्यारे माशूक का हुकम न जावे। सर्व ब्रह्मांड जूठा है और एक अपना माशूक साँचा है। अपने माशूक का जूठ सांच है और सर्व ब्रह्मांड को सांच जूठ है। अपने माशूक की अनहोनी, सर्व ब्रह्मांड की होनीयों का सार है। सो हे सुहागिन! शैतान की उत्पत्ति जो आम खलक है, तिनकी भिस्त दोजख सात पाताल और सात आकाश के तले ऊपर है और आशिक दुल्हिन की दोज़ख भिस्त माशूक की केहेर नजर और मेहेर नजर है। जो रंचक नजर माशूक की आशिक के ऊपर फिर जावे, तो आशिक को सांची दोज़ख यही है और जो माशूक की मेहेर नजर भरपूर है, तो आशिक को यही पूरन भिस्त है। इस भिस्त सिवाय आशिक जीव सृष्टि की भिस्त पर पैजार मारता है और ज्यों कर अज्ञानी प्राणी मरने को डरता है, यों कर आशिक हकीकी माशूक की केहेर नजर से डरता है। किस वास्ते की वेद कतेब में हादी माशूक का जो दिल है, तीस को अरस करके लिखा है और किबला हकीकी कहिके लिखा है। तो हे सुहागिन! अब इसका मगज मायना समजो कि जिसको हादी माशूक ने डार दिया है, सो अरस अजीम निजधाम से गिर गया। फिर वह अनंत कोटी उपाय से निजधाम को नहीं पहुंचता है और जिसको हादी माशूक ने अपने अरस दिल पर चढ़ाय लिया है, वह अनंत कोटी गुनाह करके इस जिमी में रह नहीं सकता है, कोटहू विषे निजधाम पहुंचेगा। ताते हो सुहागिन! कोटि उपाय से अपने हादी माशूक के दिल पर चढ़ा चाहिये। यह लाख बातों का एक मुद्दा है और जो कछू होनी-अनहोनी जोग-अजोग हुकम होय, सो उत्तम से उत्तम जान पहिचान के बड़े उछरंग में अपने अहो भाग्यमान को ततछिन कबूल करना। हे सुहागिन! अपने तन मन धन को ऐसे समझे रहना, जैसे राजा की कोई चीज कोई खिदमतगार सेवक लिये होवे। जाही छिन राजा का हुकम होय, ताही छिन ततखिन हाजिर करना है। ऐसे ही जा छिन माशूक का हुकम होवे, ताही छिन तन मन धन हाजिर करनो। और तन मन धन हाजिर करना और तन मन धन अपने को कदमों माशूक के निछावर करना और अपनी आतम के भीतर संकल्प करना और मोल लई दासी अति डर से हुकम बजाती है, ऐसे ततछिन हुकम बजावना और तरफ नजर माशूक के हेरत रहना।

और हो सुहागिन! छठा हरफ विश्वास यकीन का है कि तुमको ऊपर वचन हादी के पूरन विश्वास चाहिये। जो कछू मेरे हादी मुजसे कहत है, सोई सत्य है और ब्रह्मांड जो कहता है, सो जूठ है। ब्रह्मांड को सत्य जूठ है और मेरे हादी का जूठ सत्य है। और हे सुहागिन! जो तुमसे माशूक तुम्हारे दिन को रात बतावे, तो तुमको उस दिन को रात ही देखना चाहिए और रात ही कहा चाहिए। हे सुहागिन! यकीन ईमान इस ही का नाम है। और कसम है मुजको अल्लाह की और रसूल अल्लाह की जो सतगुरू में और पूरन ब्रह्म में एक जर्रे भर फरक है, मुरीद में और फरक है ईमान आकीन देखने पहचान आउन उसकी में। और नहीं तो जैसा कछू नहीं, तो जैसा कछू की फुरमाया है, वैसा ईमान विश्वास यकीन आवे, तो सत्य है सत्य है सत्य है, उसको इतही इसी जन्म में पूरनब्रह्म के दर्शन और जो सुख मरे पीछे होत है, सो जीवत सो सुख बिन ही श्रम किये और जिस मकान में कोटि वर्ष चलने से न पहुंचे, उस मकान को एक पलक में दाखिल होवे। ताते हे सुहागिन! तुम उपर वचन हादी के यकीन ल्यावो और दूसरी बात दिल में भुलाय देवो।

और सातमा हरफ यह है की पतिव्रता कैसो सेवन और जारवंती कैसो सनेह दिन रात अचल अखंड रखना चाहिये। सिवाय एक के दूसरे को सुपन जाग्रत में न जानना चाहिये। आगे पीछे भीतर बाहेर मनसा वाचा करमना करके एक ही को जाने और एक ही को माने। एक ही को देखे और एक ही को लेखे। बराबर उसके सुंदर प्यारो मीठो लाड़ीलो सर्वोपर सकल गुन निधान कोई और नजर न आवे और सिवाय उसके न कोई मन को भावे। त्रिलोक के सुंदर से सुंदर गुणवंते से, बड़े छोटे से सुपन जाग्रत में भूल के मनसा न डगडगावे। मारे तो एक और पाले तो एक। सुख देवे तो एक। जो उससे बने सो बनना कबूल है और उस सिवाय जो और से बने उस बनवे पर धूल है और उस पतिव्रता को न कबूल है। और अपने पति को साक्षात पूरन ब्रह्म जानके निर्भय निशंक होवे। छल कपट दुई दुविधा को त्याग के तन मन धन निछावर करके रात दिन निरंतर प्रीत से सेवे और जारवंती कैसो सनेह राखे, रात-दिन दीदार मिलाप की तक जक ढूंढत रहे और अपने अनेक उपाय से और अनेक छल न करके और बिन दीदार और बिना मिलाप के ना रहे और वास्ते मिलाप माशूक के तन मन धन उड़ावत रहे मानिंद धूल के और रात-दिन बीच हृदय के संकल्प विकल्प मिलाप ही को मचौ रहे और सनेह द्वारा होय के दिन रात मूरत को ध्यान राखे और दिन रात गुन यश माशूक के गाया करे आगे पीछे एक अनेक में।

और आठमा हरफ गरीबी कुरबानी दीन अधीन पराधीन है और बिक जाने का है की कदम और दरवाजा हादी माशूक का पकड़े। जैसे हारिल लकड़ी पकड़ता है और जैसे मर्कट मूठ को पकड़ता है और जैसे चीटा चुंबक पकड़ता है। शीश को हानि सेहता है (सहन करता है), परंतु मुख की चुंबक नहीं छोड़ता है।

हे सुहागिन! ज्यों कर एक गुलाम मौल लिया हुआ है और आंखन से अंधा है और पायन से पंगा है। ज्यों कर उसको और ठौर नहीं है। उसका मालिक उसको चाहे सो करे। चाहे मारे चाहे पाले, चाहे मान करे चाहे अपमान करे, परंतु सिवाय उसको और ठौर नहीं है, इसी तरह सिवाय हादी माशूक के इसको और ठौर न रहे। माशूक अपना चाहे मारे चाहे पाले, चाहे सुख देवे चाहे दुख देवे, परंतु सिवाय उसके सुपन जाग्रत में कछू और न जाने और दिन रात चरनरज को ध्यान राखे और आप चरनरज बनी रहे और कभी भूल के सुपन जाग्रत में अभिमान न करे और बराबरी न करे और अहंकार न करे और जब बोले तब अपनी निंदा और माशूक की स्तुति करे। अपने गुनन को अवगुन कर बतावे और माशूक के अवगुन को गुन कर बतावे। और अपनी नेकियों को बदी कर बतावे और माशूक की बदियों को नेकी कर दिखावे। और ज्यों कर मोल लई नौकरानी है, सो बादशाह से डरती है और डर-डर के नीच उच खिदमत सेवा करती है, ऐसे सब प्रकार की सेवा को नौकरानी की तरह दौड़े। अपनी बुजरकी और अपनी लोक वेद कुल बड़ाई और जगत की ऊंचाई गुरुआई मान बड़ाई को माशक से जुदी राखे। आगे माशूक के अपने को महानीच नापाक कर देखे और सर्वोपर और सर्वोत्तम सर्वविध पाक और पावन पवित्र अपने माशूक को लेखे और कदी चाल गत मत में हो और बचन बानी में हो शब्द तकब्बर घमंड का न निकरे। जब बोले तब बचन गरीबी का दीन आधीनताई का बोले और अपने बसौते विचार से तन मन धन प्रान से और बचन बानी से किसी का दिल न सतावे। अपने दरद दुख के समान सब का दर्द दुख जाने।

और नवमा हरफ निर्भेद का है। सतगुरु और पूरनब्रह्म को एक ही सरूप कर देखे। मनसा वाचा करमना करके मन चित बुध आतम में रोम-रोम निश्चय करके बेशक बेसुभे धाम के धनी ही जाने। और रोम-रोम निश्चय करके और विश्वास ल्याय के निष्कपट सांचे ईमान से दावा पति माशूक का दुल्हा का देवे और भाव पूरन माशूक दुल्हे का ल्याय के कर्तव्य दुलहिन का करे और चहेन चरित्र दुलहिन का बरते। तो हे सुहागिन! मैं अति झीनी मकरी के तार से महीन (बारीक) खबर कहता हूं और तुम भी सांचे ईमान से श्रवन देके सुनियो की सतगुरु मुतलक पूरनब्रह्म नहीं है। इनका तन मानिंद तन दुनिया के है और आतम इनों की पूरनब्रह्म की निज दुलहिन है। बारह हजार सखियों में दाखिल है, परंतु इनकी रुह के ऊपर पूरन पारब्रह्म का जोश आवेश खासल खास हुकम बिराजा है। और पूरन पारब्रह्म ने अपने शब्दों में कै कोटि विध से रोशन कर दिया है कि इस मृत्यु लोक में पूरन सतगुरु का जो सरूप मेरा ही है और मेरा माशूक है और मेरे मिलने का पूरन दरवाजा है और इन माया में बिना मिले इस सरूप के मैं न आगे किसी को मिला हूं और न अभी मिलता हो और न आगे मिलुंगा। और हे सुहागिन! सरूप जो सतगुरु साहब का है, सो कछु मुतलक निश्चय करके पूरन पारब्रह्म साक्षात यह नहीं है, यह तो मानिंद बारा हजार रुह मोमन के है, परंतु एक विध से इनको सब विध कि बुजरकी बड़ाई पहुंचती है कि इनकी रुह दिल में पूरन पारब्रह्म साक्षात विराजे है और पूरन पारब्रह्म के कोटि जुबान से ठौर ठौर जाहेर रोशन कर दिया है कि इस माया में जो सतगुरु का सरूप है, सो साक्षात मेरा प्रतिबिंब है। जिसको मेरे सरूप कि जरे जरे कि हकीकत भेद देखने होय, सो सतगुरु के सरूप में होय के देख लेवे। मानिंद सूरज के जैसे जल के घड़ा में जो प्रतिबिंब के सूरज है, तिन करके साक्षात असल सूरजो कि जरे जरे हकीकत पाइयत है। और हे सुहागिन! सतगुरु के सरूप में प्रतिबिंब जो पूरन पारब्रह्म है, सो ऐसे है जैसे पत्थर के बीच अगिन बसत है और काष्ठ में अगिन रहत है। मूर्ख अज्ञानियों को काष्ठ और पत्थर है और जो कोई चतुर जुगति है, सो उसका काष्ठ पत्थर से अगिन निकाल लेते है और अपना कारज करते है। ऐसे ही सतगुरु को जो सरूप है, सो बीच नजर अभेदी क्रूर अज्ञानियों के मानिंद दुनिया के है और चतुर वचिक्षण भेदियों को वही सरूप साक्षात पूरन ब्रह्म है। जो कोई चतुर वचिक्षण आशिक भेदी है और निष्कपट चतुर पूरन भावी है, तिनकी

जो अग्नि सूरज से अनंत कोटि उपाय से नाही उतरत है, सो अग्नि उस आरसी का जोग पाय के ततछिन उतरत है और चंद्रमा से अमृत उतरत है। इसी विधी से जो शिष्य पूरन भाव और संपूरन इश्क लैके तरफ हादी माशूक के चितवन किया सोई ततछिन पूरनब्रह्मरूपी अग्नि आशिक के दिल में प्रकट हो गई और पूरन ब्रह्मरूपी माशूक रोशन हुआ। और हो सुहागिन! जब संपूरन रुहें श्री परमधाम में जाग्रत होयगी और जब श्री राजजी अपने कर्तव्य का इन्साफ कर है, तब जेता कर्तव्य तुमने साथ सतगुरू के किया है, तितना कर्तव्य तरफ तुम्हारे अपने लगावेंगे और कहेंगे कि तुमने उस माया में मुजसे ऐसी करी। और जेती कर्तव्य सतगुरू के सरूप ने तुमसे करी, सो श्री राजजी अपनी तरफ लगावेंगे और कहेंगे कि मैने उस माया में तुमसे ऐसी करी थी और तुमने मोको न चीन्हा। ताते हे सुहागिन! इतेक ही में अनंत कोटि बातों का मूल समज लेउ। इन बातों कि कथा पोथी नहीं होती है, इन बातों कि आदि अनादि से इशारत ही होती आई है । इसको सतगुरू कि सैन कहत है। जो सेज सुहागिन होत है, सो अपने दुल्हा को रंग सेज की से इशारत ही में लख लेत है। और उस घर की और जो उस सेज की सुहागिन नहीं है, ताकि यही पहचान है कि उसको यह इशारत समज में नहीं आती है और न उसको इश्क अमल है। वह इस पाति को ऐसे सुन लेते है, जैसे सुहागिन की पाती कोई रांड सुन लेवे और एक रोम उसको न ले पावे।

॥ श्री परमहंस महाराज श्री जुगलदासजी की प्रेमपत्री सम्पूर्ण ॥

क्यों कहूं चरन की बुजरकियां, इत नाहीं ठौर बोलन।
ए पकड़ सरूप पूरा देत हैं, मेरे जीव के एही जीवन।।

हमारे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद!

किसी भी प्रश्न के लिए कृपया यूट्यूब चैनल पर अवश्य जाएँ।

श्री प्राणनाथ जी वाणी

॥ प्रेम खोल देवे सब द्वार ॥

श्री परमहंस महाराज श्री जुगलदासजी

की दिव्य छाया में प्रकाशित

shriprannathjivani@gmail.com   www.shriprannathjivani.com